International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN: 2348 - 6457
P-ISSN: 2349 - 1817
Email: editor@ijesrr.org
August 2021
www.ijesrr.org

स्वामी विवेकानन्द और गांधी जी के शैक्षिक विचारो की समानता एवं असामनता का अध्ययन

Rajni Gupta
Research Scholar
Malwanchal University Indore (M.P.)

Dr. Priyanka Gupta
Research Supervisor
Malwanchal University Indore (M.P.)

सार

शिक्षा' एक अत्यधिक विवादास्पद विषय रहा है। व्यक्ति एवं समाज के सन्दर्भ मे इसे सदैव प्रशंसा अथवा दोष का भागी माना जाता रहा है। 'कैसी है' और 'कैसी होनी चाहिये ने सदैव शिक्षा को विवादग्रस्त रखा है। इसके फल स्वरूप वर्तमान से असन्तुष्टि की स्थिति एक स्थाई स्थिति का रूप धारण करती जा रही हैं। इस स्थिति के लिए उत्तरदायी मुख्य रूप से शिक्षा के अर्थ मे समरूपता का न होनें है। प्रत्येक विवादकर्त्ता इसके अर्थ को एक विभिन्न विशिष्ट प्रारूप मे देखता है, क्योकि आदिकाल से वर्तमान तक इसके अर्थो मे इतना परिवर्तन आया है कि इसकी अवधारणा एक भ्रामक रूप ले चुकी है। इस कारण शिक्षा की अवधारणा का एक स्पष्ट प्रारूप प्रस्तुत करना आवश्यक है।

स्वामी और गांधी के शैक्षिक विचारो मेसमानता।

शिक्षा का अर्थ: शिक्षा के अर्थ की दृष्टि से स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर और गांधी जी के शिक्षा – दर्शन मे यह समानता देखने को मिलती है , कि चारो शिक्षा शास्त्रियो शिक्षा के व्यापाक दृष्टिकोण को सामने रखा और शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार माना। दोनो ही शिक्षा शास्त्रियो ने शिक्षा का अर्थ व्यक्ति की अन्तनिर्हित पूर्णता की अभिव्यक्ति माना हैं।

शिक्षा के उद्देश्य : चारो ही शिक्षाशास्त्रियो ने शारीरिक विकास के उद्देश्य के साथ–साथ व्यक्ति के सामाजिक विकास का उद्देश्य, धार्मिक विकास का उद्देश्य, आर्थिक विकास का उद्देश्य, मानसिक विकास का उद्देश्य, चारित्रिक विकास का उद्देश्य, ज्ञानेन्द्रियो के विकास का उद्देश्य, आध्यात्मिकता के विकास का उद्देश्य आदि सभी को शिक्षा के उद्देश्यो मे सम्मिलित किया हौ गांधी जी के समान ही स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी चरित्रनिर्माण के विकास को शिक्षाका महत्वपूर्ण उद्देश्य माना है।

पाठ्यक्रम : दोनो शिक्षाशास्त्रियो ने पाठ्यक्रम को सक्रिय गतिविधियो के साथ–साथ चारोओर के जगत की वास्तविक समस्याओ पर आधारित किया है। पाठ्यक्रम के सिद्धान्तो को लेकर चारो के शिक्षा दर्शन मे समानता है। उन्होने जिन सिद्धान्तो का समर्थन किया है, उनमे पाठ्यक्रम को बालकेन्द्रित बनाने क्रियाशीलता पर आधारित, करने जीवन के पूर्ण अनुभवो से ज्ञान प्राप्त करने उन्हे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्टीय आधारो पर निर्मित करने, बालक की वर्तमान एवं भविष्य की आवश्यकताओ को ध्यान मे रखना आदि सम्मिलित है।

इनके दारा निर्धारित पाठ्यक्रम मे निम्नलिखित विषयो जैसे – भाषा एवं साहित्य, गणित, विज्ञान, सामाजिक विषय, कृषि, प्राविधिक विषय, कला, दर्शन धर्मशास्त्र, मनोविज्ञान तथा अन्य व्यावसायिक विषयो के साथ पाठ्येत्तर क्रियाओ (खेलकूद, समाज

सेवा आत्मानुशासन एवं प्रबन्ध) आदि को पाठ्यक्रम में स्थान दिया है। चारों ही शिक्षा शास्त्रियों बालिकाओं के लिये गृह विज्ञान विषय को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के लिये कहां कला तथा संगीत को भी पाठ्यक्रम में यथोचित स्थान दिया गया।

शिक्षण विधि : स्वामी जी के समान ही गांधी जी भी पुस्तकीय शिक्षण विधि के घोर विरोधी थे। इन्होंने 'क्रिया विधि' या 'करके सीखने' को अधिक महत्व दिया। इन शिक्षाशास्त्रियों ने व्याख्यान और प्रश्नोत्तर विधि के महत्व को भी स्वीकार किया है।

शिक्षा का माध्यम : स्वामी जी विवेकानन्द और गांधी जी ने शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा को ही स्वीकार किया है।

शिक्षक : इन दोनों ही शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षक में उन सभी गुणों का होना आवश्यक बताया है, जो व्यक्ति को उच्चचरित्र, उत्तम व्यक्तित्व प्रदान करते हैं। इन सभी ने शिक्षक को बालक का मित्र, सहायक, निदेशक एवं पथप्रदर्शक के रूप में स्वीकार करते हुए कठोर शिक्षकों को जेल –वार्डेन, ड्रिल–सार्जेन्ट एवं जन्मजात अत्याचारी की संज्ञा दी है।

अनुशासन : स्वामी जी के समान ही गांधी जी भी दमनात्मक अनुशासन के घोर विरोधी थे।

शिक्षार्थी : ये दोनों शिक्षार्थी में कुछ विशेष गुणों जैसे – विनम्रता, स्फूर्ति, नियमों का पालन, उच्चाभिलाषा, सामाजिकता, स्वाध्याय, ब्रह्मचर्य साधना, एकाग्रता, अभौतिक के प्रति इच्छा, आत्मानुभूति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि का होना आवश्यक मानते हैं।

स्त्री शिक्षा : स्वामी विवेकानन्द भारत के वर्तमान को सुखी बनाने के लिये स्त्रियों को स्त्रियोचित शिक्षा देने के पक्ष में थे। गांधी जी ने अपने – अपने उत्कृष्ट अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान में सह शिक्षा के साथ–साथ स्त्री शिक्षा के विभाग अलग से भी स्थापित किये हैं। ये सभी विचार इस बात को प्रकट करते हैं कि इन दोनों शिक्षा शास्त्रियों ने भी स्त्री शिक्षा का प्रबल समर्थन किया है।

अतः स्पष्ट है कि स्त्री शिक्षा के बारे में स्वामी विवेकानन्द और गांधी जी के विचार समान हैं।

जनसाधारण की शिक्षा : जनसाधारध की शिक्षा के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द का विचार था कि जन– साधारण की शिक्षा के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है, उनकी दरिद्रता, गरीबी की अवस्था। गांधी जी ने अशिक्षा को मानव के लिये सबसे पड़ा अभिशाप माना है। उनके अनुसार अशिक्षा व्यक्ति के पतन का प्रमुख कारण है क्योंकि अशिक्षा से व्यक्ति को अपने समाज, देश व राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध नहीं हो पाता। इससे स्पष्ट है कि गांधी जी भी जन – साधारण की शिक्षा के घोर समर्थक थे।

धार्मिक शिक्षा – धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द और गांधी जी के विचार लगभग समान ही हैं। स्वामी जी के अनुसार हमारे संस्कार धर्म द्वारा ही बनते हैं, दुर्बलता तथा अज्ञानता का नाश भी धर्म द्वारा ही होता है।

स्वामी विवेकानन्द के समान ही गांधी जी ने भी धार्मिक शिक्षा का समर्थन किया

है। गांधी जी कुछ सिद्धान्तों और विश्वासों के अनुसार चलने को ही धर्म नहीं समझते, वरत् सत्य, प्रेम और न्याय की मान्यताओं में अटूट विश्वास को ही धर्म मानते थे।

व्यावसायिक शिक्षा : स्वामी जी ऐसी शिक्षा के समर्थक थे, जो खाली पेट भी न रखे और न क्लर्क तैयार करने की ही परिस्थिति बनाये। अपने इस उद्देश्यकी पूर्ति हेतु उन्होंने व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा का आश्रय लिया। गांधी जी भी व्यावसायिक शिक्षा के पक्ष में थे। वे शिक्षा द्वारा मनुष्य को पूर्णरूपेण स्वावलम्बी बनाना चाहते थे।

सह – शिक्षा : सह शिक्षा के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द ने अपने दार्शनिक सिद्धान्तों को जनता तक पहुँचाने के लिये शिक्षा की आवश्यकता का अनुभव किया था। उनकी शिक्षा व्यवस्था में स्त्री–पुरूष दोनों को शिक्षित होने का समान अधिकार था। स्वामी जी पूर्णरूपेण सह–शिक्षा के विरोधी थे। उन्होंने सह–शिक्षा का कभी भी पक्ष नहीं लिया और किसी भी स्थिति में वे बालक–बालिकाओं को एक स्थान पर साथ बैठकर पढ़ाने के पक्ष में नहीं थे। सह–शिक्षा के बारे में स्वामी जी के विचारों से गांधी जी पूर्णतः नही परन्तु कुछ हद तक सहमत थे।

ग्रामीण शिक्षा : स्वामी विवेकानन्द और गांधी जी के शैक्षिक विचारों में एक समानता यह भी देखने को मिलती है कि पश्चिम में मनुष्य की बुद्धि भावना, प्राण और भौतिक जीवन के विकास को अपना आदर्श माना है, लेकिन उसने मनुष्य के आध्यात्मिक अस्तित्व की महत्ता को एक ओर छोड़ दिया है।

अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानन्द और गांधी जी के शिक्षा दर्शन में विभिन्न शैक्षिक एवं क्षेत्रों से सम्बन्धित विचारों को लेकर समानता देखने को मिलती है। चारों ही शिक्षाशास्त्री सभी दार्शनिक विचारधाराओं – आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद, यथार्थवाद, मानवताबाद तथा विश्व बन्धुत्व की भावना आदि की दृष्टि से समान समानताओं के लिए एक ही संदेश देता है।

स्वामी विवेकानन्द और गांधी जी के शैक्षिक विचारों में असमानताएं–

स्वामी विवेकानन्द ने अपने शिक्षा दर्शन में वेदान्त को आधार बनाकर अपने शैक्षिक विचारों को जनता के सम्मुख रखा। स्वामी जी के समान ही श्री अरविन्द ने अपने शिक्षा दर्शन में आध्यात्मिक योग दर्शन को अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया। गांधी जी कट्टर धार्मिक व्यक्ति थे। उनके आदर्शवादी दर्शन ने उन्हें आत्मज्ञान की प्राप्ति की ओर प्रेरित किया।

शिक्षा के उद्देश्य की दृष्टि से स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा का उद्देश्य आत्मविश्वास उत्पन्न करना बताया, श्री अरविन्द ने शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य अपने को जानो वहीं गुरूदेव का नारा है आत्म साक्षात्कार, परन्तु गांधी जी ने शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य जीविकोपार्जन बताया है। ऐसा नहीं कहा जा सकता, कि स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द और गुरूदेव ने अपने – अपने शिक्षा के उद्देश्यों में आत्मनिर्भरता के उद्देश्य को महत्व ही नहीं दिया। इन तीनों शिक्षाविदों ने भी बालक को आत्मनिर्भरता की शिक्षा प्रदान का सर्वप्रम्मुख उद्देश्य जीविकोपार्जन को नहीं माना।

पाठ्यक्रम ऐसा हो जिसमें निषेधात्मकता न हों। श्री अरविन्द और गुरूदेव ने बालकेन्द्रित या बाल मनोविज्ञान पर आधारित पाठ्यक्रम का समथ्रन किया, परन्तु गांधी जी ने किया प्रधान पाठ्यक्रम को ही महत्व दिया। स्त्री–शिक्षा के सम्बन्ध में चारों शिक्षाशास्त्रियों के विचार समान है, परन्तु स्वामी विवेकानन्द का विचार है कि स्त्रियों को शिक्षित अवश्य करना चाहिए किन्तु उन्हें नृत्य, संगीत से दूर ही रखना चाहिये।

अनुशासन के सम्बन्ध में स्वामी जी ने कहा कि शिक्षक को मुक्त्यात्मक सिद्धान्त को मानना चाहिये। दूसरी ओर स्वामी जी ने यह भी कहा कि विद्यार्थियों में ब्रह्मचर्य का गुण हो तथा वह अपनी ज्ञानेन्द्रियों एवं कमेन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण रखे। श्री अरविन्द योग साधना से अनुशास स्थापित करना चाहते थे। इसके लिये के मनसावाचा कर्मणा से ब्रह्मचर्य के पालन पर बल देते हैं। श्री अरविन्द के समान गुरूदेव भी आत्मानुशासन को ही सच्चा अनुशासन कहते थे। गांधी जी से भी आत्मप्रेरित अनुशासन को आवश्यक माना है, वे प्रभावात्मक अनुशासन को भी महत्वपूर्ण मानते थे।

जनसाधारण की शिक्षा के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द और गांधी जी के विचार समान हैं। सहशिक्षा का स्वामी जी ने घोर विरोध किया, उन्होंने कहा कि बालक – बालिकाओं को एक साथ शिक्षा देने से बालिकाओं का सम्पूर्ण विकास नहीं हो पाता है। गांधी जी ने यह निर्णय किया कि 8 वर्ष की अवस्था तक बालक–बालिकाओं को साथ–साथ पढ़ाया जाए। यदि अच्छा वातावरण हो तो सोलह वर्ष की अवस्था तक सह–शिक्षा चलाई जा सकती है। सह–शिक्षा के सम्बन्ध में विवेकानन्द जी और गांधी जी के विचार कहीं स्पष्ट रूप से नहीं मिलते हैं।

निष्कर्ष–

अतः हम कह सकते हैं कि स्वामी विवेकानन्द और गांधी जी के शैक्षिक विचारों में काफी हद तक समानताएं ही परिलक्षित होती हैं, असमानताएं तो कम ही दिखाई देती है। इन महापुरूषों का जीवन दर्शन और शैक्षिक दर्शन अत्यन्त ही उच्च कोटि का रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- खान, महमूद अहमद (2015) : पर्सनाल्टी प्रोफाइल, इमोशनल मैच्योरिटी एण्ड पैरेन्टल एक्सेप्टेन्श, रिजेक्शन ऑफ चिल्ड्रेन ऑफ वर्किंग एण्ड नॉन वर्किंग मदर्स, शोध प्रबन्ध, डिपार्टमेन्ट ऑफ एजुकेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ काश्मीर।
- लक्ष्मी, आर0 (2000) : ह्युमनिज्म ऑफ विवेकानन्द, समरिफलेशन्स, डाक्टरोल थीसिस, डिपार्टमेन्ट ऑफ फिलासफी, यूनिवर्सिटी ऑफ केरला।
- लाल एवं शर्मा (2011) : भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएँ, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
- मारकस एवं अन्य (2011) : द एसोसिएशन बिटविन लो सोशियो इकोनोमिक स्टेट्स एण्ड डिप्रेसिव सिम्पट्म्स ऑन टेम्परामेन्ट एण्ड पर्सनाल्टी ट्रेटस, पर्सनाल्टी एण्ड इण्डी विजुअल डिफ्रेन्सेस, 51, पेज–302–308।

- मरगाड, अर्चना जी (2012) : पर्सनाल्टी डेवलपमेन्ट इन द भागवत गीताए क्रिटिकल स्टडी, शोध प्रबन्ध, डिपार्टमेन्ट ऑफ संस्कृत, कर्नाटक यूनिवर्सिटी कर्नाटक।
- मिश्रा (2009) : शिक्षा का समाजशास्त्र न्यू कैलाश प्रकाशन इलाहाबाद।
- मित्तल (2012) : शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, डॉर्लिंग किंडरस्ले (इंडिया) नोएडा।
- मूर्ति, ए0 श्रीनिवास (2012) : पर्सनाल्टी ऑफ एडोलसेन्स इन रिलेशन टू दियर एडजस्टमेन्ट एण्ड डिसीजन मेंकिंग, शोध प्रबन्ध, डिपार्टमेन्ट ऑफ एजुकेशन, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, आंध्र प्रदेश।
- नायर, वी0 (1980) : एजुकेशनल आइडियाज ऑफ स्वामी विवेकानन्द, शोध प्रबन्ध, यूनिवर्सिटी ऑफ केरला।
- नेविदिता, लेसराम (2008) : द इम्पैक्ट ऑफ फेमिली इन्वायरमेन्ट ऑफ द पर्सनाल्टी डेवलपमेन्ट ऑफ अ चाइल्ड, शोध प्रबन्ध, डिपार्टमेन्ट ऑफ एजुकेशन, मणिपुर यूनिवर्सिटी, मणिपुर।
- निखिलानन्द, स्वामी (2016) : विवेकानन्द एक जीवनी, अद्वैत आश्रम, कोलकाता।
- निर्वेदानन्द, स्वामी (2001) : हमारी शिक्षा, रामकृष्ण मठ, नागपुर।
- निशंक (2016) : संसार कायरों के लिए नही स्वामी विवेकानन्द का जीवन प्रबन्धन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- ओड़, एल0के0 (2008) : शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।